काव्य के प्रकार(Forms of Poetry)

1. दृश्य काव्य

2. श्रव्य काव्य

3. मिश्र काव्य (चम्पू काव्य)

दृश्य काव्य

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम् ।

दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपात्तु रूपकम् ॥साहित्यदर्पण 6.1॥

अर्थात् दृश्य और श्रव्य के भेद से पुनः काव्य दो प्रकार का होता है । अभिनेय काव्य दृश्य होता है । दृश्य में रूप का आरोप होने के कारण इसको रूपक भी कहते हैं। कारिका में 'पुनः' शब्द का प्रयोग-

व्यंग्य की दृष्टि से- ध्वनिकाव्य और गुणीभूत व्यंग्य काव्य ।

सामाजिक की दृष्टि से- दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य ।

दृश्य काव्य को रूपक भी कहते हैं- **'दृश्यं तत्राभिनेयं । तद्रूपारोपात्तु रूपकम् ।'** संस्कृत साहित्य में इसे रूपक, रूप, अभिनय तथा नाटक भी कहा जाता है ।

दृश्य काव्य/रूपक के भेद

“नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः ।

ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश ॥”

नाटक	प्रकरण	भाण	व्यायोग	समवकार
डिम	ईहामृग	अङ्क	वीथी	प्रहसन

नाटक

१. कथानक- अर्थात् कथा । कथानक ही वह मूल तत्त्व है, जिसको लेखक अपनी प्रतिभा से अनेक युक्तियों से सुसज्जित कर नाटक का निर्माण करता है । कथानक के मूल स्रोत- ऐतिहासिक घटना, वर्तमान की कोई घटना और कवि-कल्पित कोई घटना ।

‘नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्’ । ख्यात से तात्पर्य है ऐसी कथा जो इतिहास में प्रसिद्ध हो यथा- रामायण, महाभारत । यह मुख्य कथा **आधिकारिक कथा** और **प्रासंगिक कथा**(पताका-बड़ी अथवा कुछ दूर तक चलने वाली कथा । प्रकरी- लघु एवं अत्यल्प दूर तक चलने वाली) पर आधारित है ।

२. सन्धि- ‘पञ्च सन्धिसमन्वितम्’ । पांच सन्धियों से युक्त । नाटक में कथाओं को जोड़ना । पांच प्रकार- मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श और निर्वहण ।

३. नाट्क का वर्ण्य-विषय- अनेक प्रकार के विलास, समृद्धि तथा ऐश्वर्य का वर्णन होना चाहिये । नाटक में सुख-दुख दोनों अवस्थाओं का वर्णन होना चाहिये ।

४. अंकों की संख्या- पांच से दस तक हो ।

५. नायक- नाटक के कथा का फल प्राप्तकर्ता नायक होता है । नायक दान देने वाला, कृतज्ञ, विद्वान्, कुलीन, लक्ष्मीवान्, लोगों के अनुराग का पात्र, रूप-यौवन और उत्साह से युक्त, तेजस्वी, चतुर और सुशील होता है । मुख्य रूप से चार प्रकार का होता है । **धीरोदात्त** (अपनी प्रशंशा न करने वाला, क्षमायुक्त,अति गम्भीर स्वभाव, हर्ष-शोकादि में एकसमान वाला, स्थिर प्रकृति, विनयवान, दृढ़व्रत यथा- अभिज्ञानशाकुन्तल का दुष्यन्त) । **धीरोद्धत**(मायावी, प्रचण्ड, चपल, घमण्डी, शूर एवं अपनी प्रशंसा स्वयं करने वाला यथा- वेणीसंहार का नायक भीमसेन) । **धीरललित**(निश्चिन्त, अत्यन्त कोमल स्वभाव वाला, सदा नृत्य गीतादि कलाओं में तत्पर यथा- रत्नावली नाटिका का वत्सराज) । **धीरप्रशान्त**(नायक के सामन्य गुणों से युक्त ब्राह्मण तथा वणिक् जाति का, यथा- मालतीमाधव नाटक का माधव) ।

नायिका का भी वर्णन है- स्वकीया(विनय युक्त, सरलता, गृहकार्य में दक्ष), परकीया(विवाहिता तथा कन्या) तथा साधारण स्त्री(गणिका-वेश्या कोटि की नायिका) ।

नाटक में अन्य पात्र भी होते हैं- विदूषक, मन्त्री, विट, चेटी, प्रतिहारी ।

६. रस- रसानुभूति ही समाज के आकर्षण का केन्द्र होता है। आठ प्रकार के रस- श्रृंगार, वीर, वीभत्स, रौद्र, हास्य, अद्‌भुत, भयानक तथा करूण। शान्त रस की भी कल्पना है जो कि श्रव्य काव्य में प्रस्तुत होता है। इन रसों में से वीर अथवा श्रृंगार रस अंगी होता है अन्य रसों का भी प्रयोग आवश्यक है।

७. नाट्य रचना- यह गाय के पूँछ के अग्रभाग के समान होता है। जैसे गाय के पुच्छ के बाल ऊपर से नीचे की ओर समन्वित होते जाते हैं तथा अन्त में सारे बाल एकत्रित होकर एक रूप हो जाते हैं उसी प्रकार नाटक के अंक अथवा कथा एक दूसरे से समन्वित होते जाते हैं तथा अन्त में नाटक सम्पन्न हो जाता है।